चौहड़मल आ रेशमा

मोकामा घाटक अमर प्रेम-दुखान्त

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : मोकामा घाट

गंगा जतय सभसँ चाकर होइत छथि, ओतय अछि मोकामा घाट। घाटक एक कात टाल — दूर धरि पसरल पानि-माटिक राज — आ ओही टालक हवामे बहैत अछि ई खिस्सा: चूहड़मल आ रेशमाक।

ई प्रेम-गाथा थिक — मुदा एहन प्रेमक, जकरा समाज स्वीकार नहि केलक। एक कात अखराहाक वीर बोनिहार, दोसर कात धनिक घरक बेटी — आ बीचमे ओ सभटा देवाल जे मनुक्ख मनुक्खक बीच ठाढ़ करैत आयल अछि। देवाल जीति गेल, प्रेमी हारि गेल — मुदा खिस्सा? खिस्सा आइयो मेला लगबैत अछि।

अध्याय १ : अखराहाक वीर

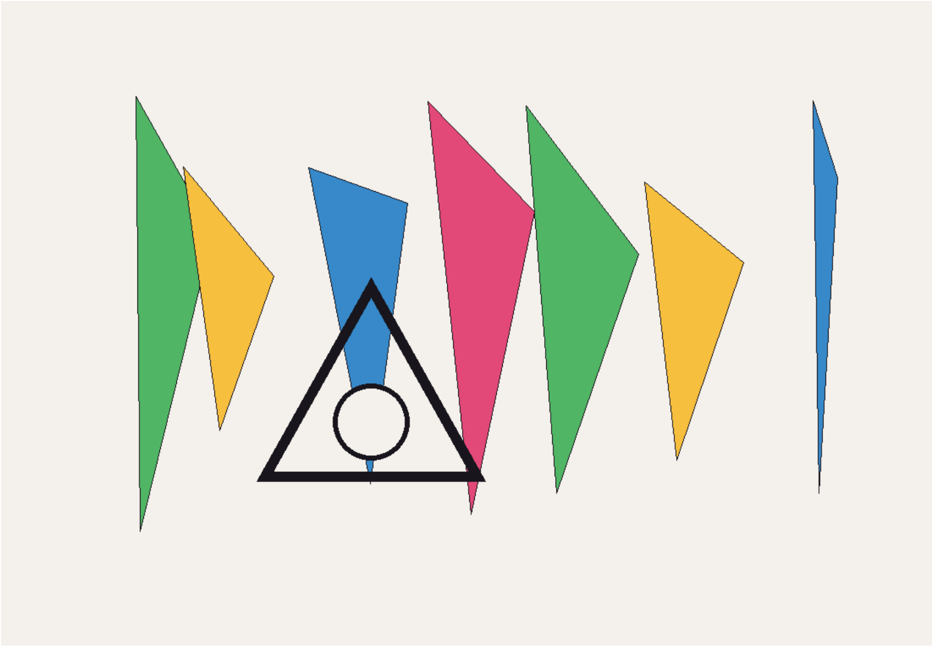

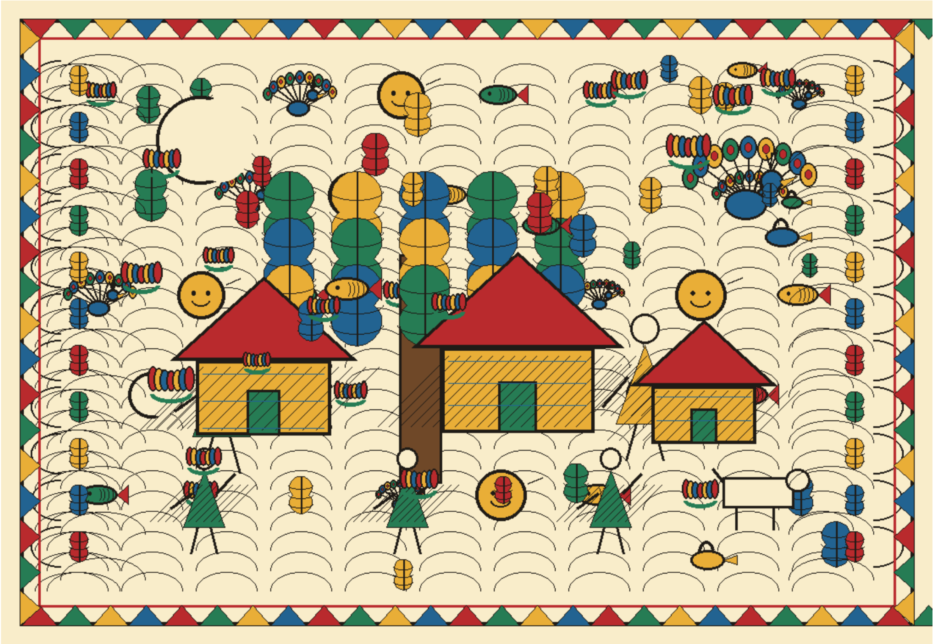

चित्र 1

चूहड़मल — गरीब बोनिहार, जातिक दूधबंसी। बापक नाम राजवंसी, माताक अंजनी, काकाक बैसीराय। घरमे धनक नामपर खाली मेहनतिक देह छल — मुदा से देह केहन!

अखराहाक वीर छल चूहड़मल। भोरे गंगा-स्नान, फेर अखराहाक माटि — दण्ड, बैठक, कुश्ती। ओकर पकड़िसँ पहलमान सभ थर्राए, आ ओकर सोझ स्वभावसँ टोल-पड़ोस नेहाल।

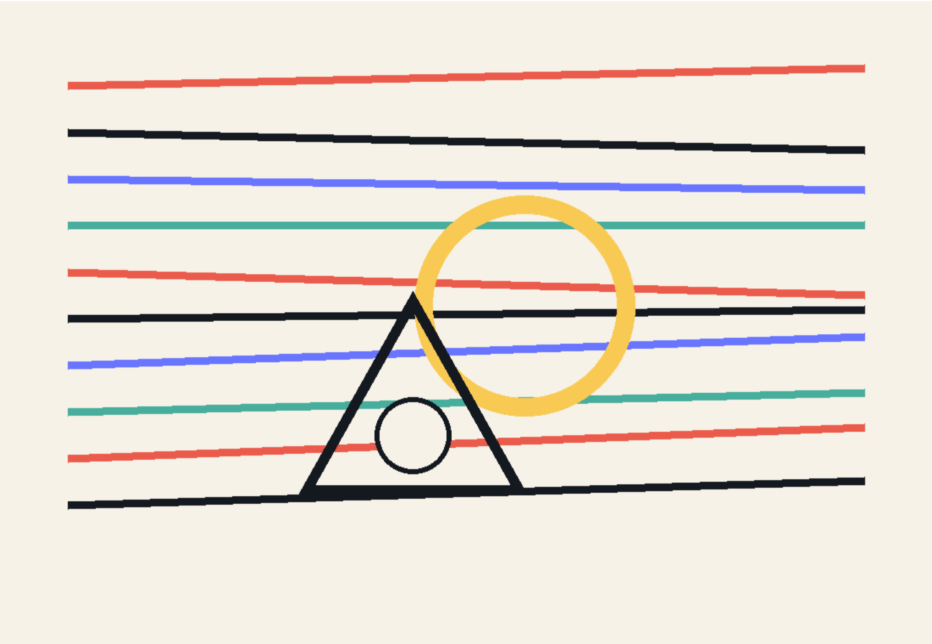

चित्र 2

बोनिहारक बेटा छल, त' दिन भरि खटैत छल — खेत, घाट, बोझ। मुदा ओकर चालिमे दीनता नहि छल; छल एकटा एहन स्वाभिमान जे गरीबीक फाटल कपड़ोमे चमकैत छल।

मोकामा घाटपर ओकरा सभ चिन्हैत छल — 'राजवंसीक बेटा, अखराहाक शेर।' आ यएह चिन्हारी एक दिन गंगाक काते-कात बहैत ओहि ऊँच हवेली धरि पहुँचि गेल, जतय ओकर पहुँचब मना छल।

अध्याय २ : रेशमा

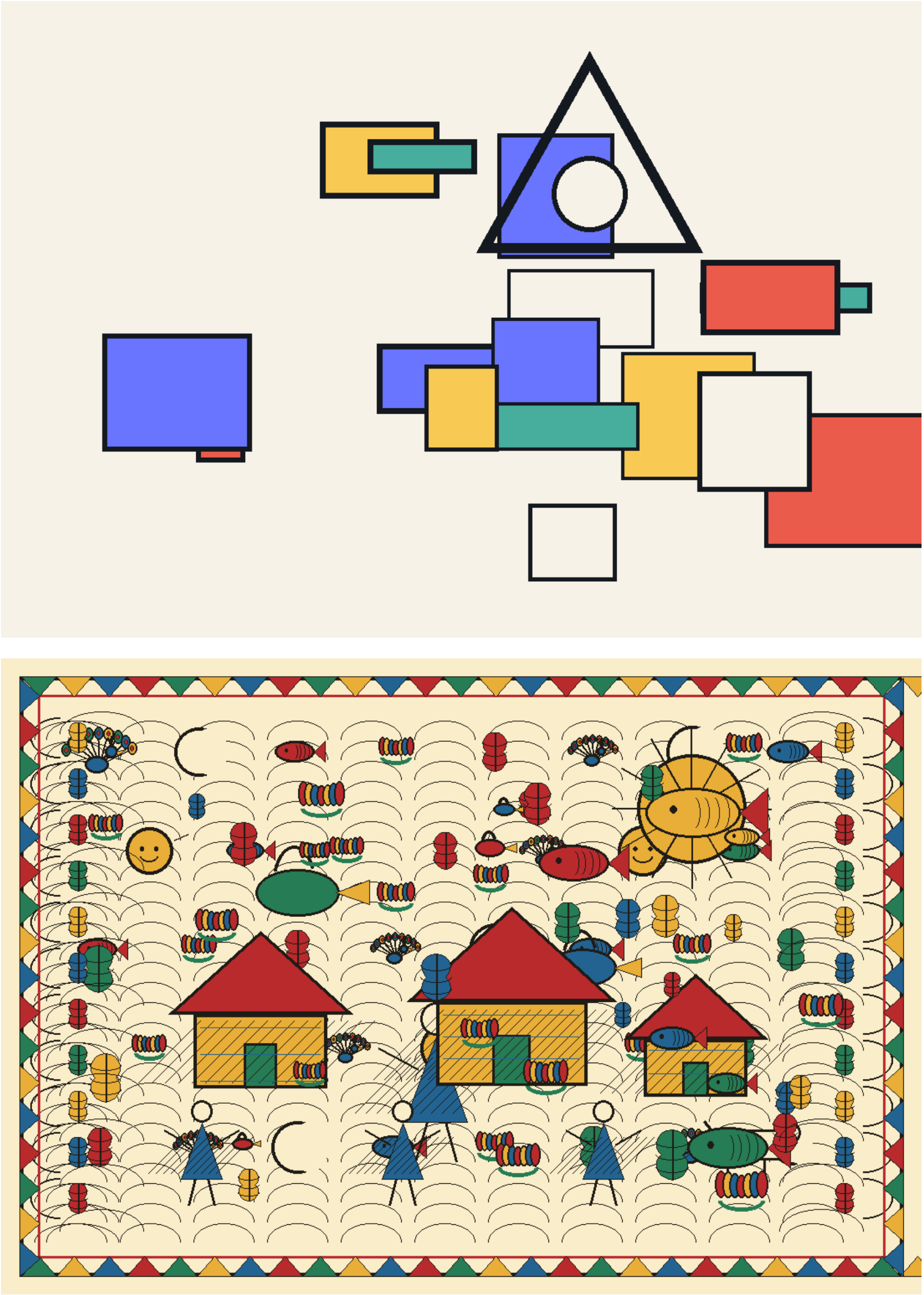

चित्र 3

रेशमा — अजबी सिंहक बेटी, अजय सिंहक बहिन। भूमिहार ब्राह्मण घराना, पाइ-पैसा-रूपा, हवेली, नोकर-चाकर — जे किछु धनसँ भेटैत अछि, सभटा रेशमा लग छल।

मुदा रेशमाक भीतर एकटा एहन मोन छल जे हवेलीक ऊँच देवालसँ ऊँच उड़ैत छल। ओकरा हिसाब-किताबक दुनियाँ नहि, गंगाक खुजल हवा नीक लगैत छल।

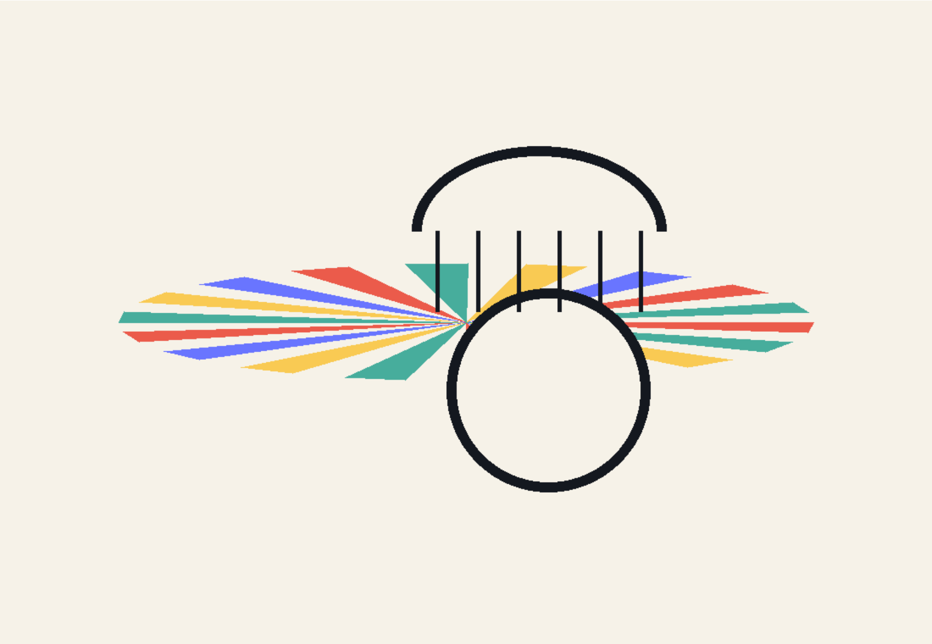

चित्र 4

एक दिन गंगा धारक कातमे भेँट भेलै — रेशमा सखी-बहिनपाक संग घाटपर छलि, आ ओम्हरसँ चूहड़मल — भीजल देह, कान्हपर गमछा, चालिमे अखराहाक ठसक।

आ रेशमा देखिते रहि गेलीह। ई ओ क्षण छल जकरा खिस्सा 'पहिल नजरि' कहैत अछि — जखन आँखि अपन काज छोड़ि करेजक काज करए लगैत अछि। रेशमा ओही क्षण हारि गेलि — आ जे हारल, से एहन जिद्दी हारि हारल जे जीतबाक कोनो इच्छे नहि रहलै।

अध्याय ३ : एकतरफा बसात

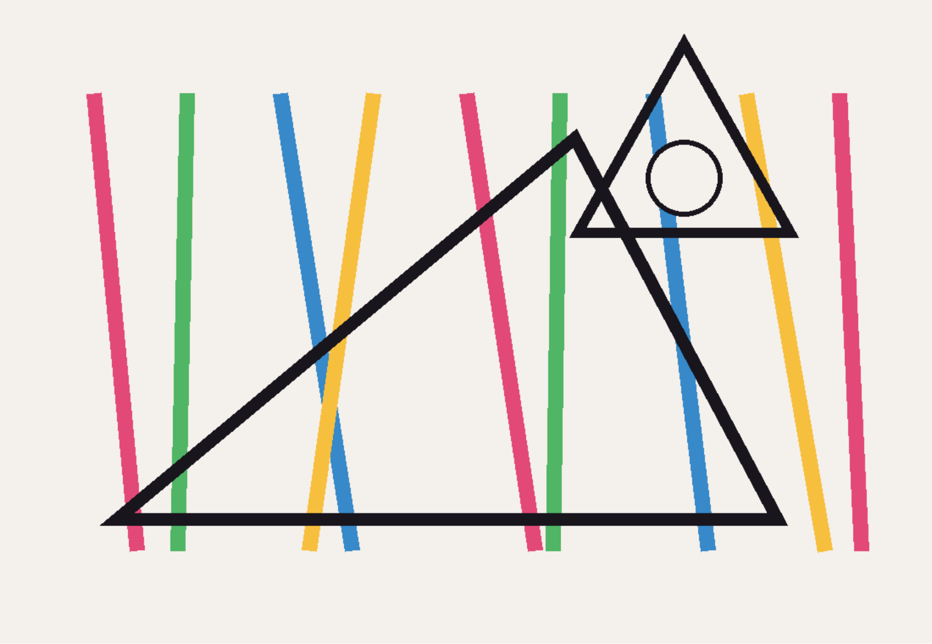

चित्र 5

रेशमा अपन प्रेम व्यक्त कऽ देलनि — सोझे, बिनु लाग-लपेटक। धनिक बेटीक ई साहसे छल — ओ माँगब जनैत छलि।

मुदा चूहड़मल? ओ बुझबे नहि करए! कतबो बुझाबथि रेशमा, चूहड़मल गप काटि दिअए — 'अहाँ हवेलीक बेटी, हम घाटक बोनिहार। ई बाट बाटे नहि थिक।' ओकर मना करब अभिमान नहि छल — दूरदर्शिता छल; ओ जनैत छल जे एहि प्रेमक दाम की लागत।

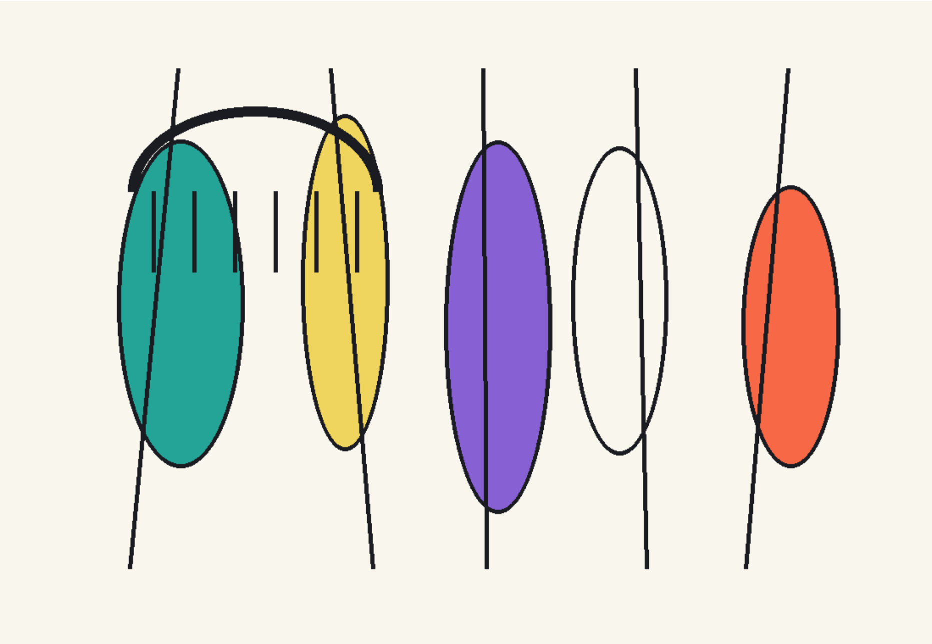

चित्र 6

मुदा प्रेम दूरदर्शिताक भाषा कहिया बुझलक? रेशमा भेँट करबा लेल आबि जाथि — कखनो घाटपर, कखनो टालक बाटपर। बहन्ना सए, गन्तव्य एक।

आ जेना-जेना ई भेँट बढ़ल, तेना-तेना चूहड़मलक 'नहि' पातर पड़ैत गेल। पाथरपर पानिक बून्न — एक दिनमे किछु नहि, मुदा लगातार? पाथरो घसाइत अछि। आ एम्हर हवेलीक कानो ठाढ़ भऽ रहल छल — एहन भेँट बेसी दिन नुकाएल नहि रहैत।

अध्याय ४ : पहरा

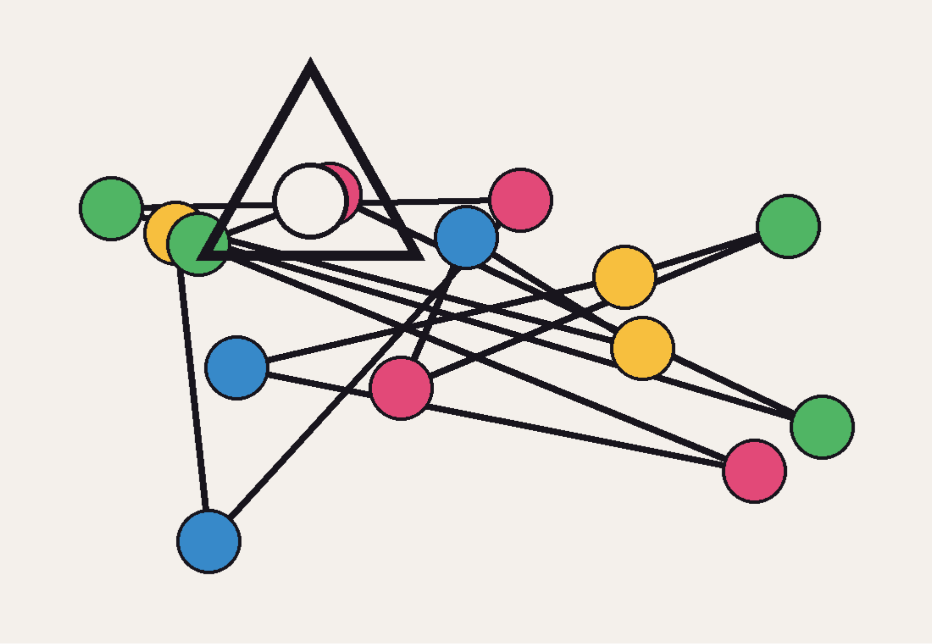

चित्र 7

भेद खुजल — आ हवेलीमे भूकम्प आबि गेल। अजबी सिंहक बेटी आ घाटक दुसाध बोनिहार! भूमिहार घरानाक 'मर्यादा' थरथरा उठल।

रेशमापर पहरा पड़ि गेल। दरबज्जापर पहरेदार, खिड़कीपर नजरि, सखी-बहिनपा धरि सँ मिलबापर रोक। हवेली रेशमा लेल घरसँ कैदखाना बनि गेल।

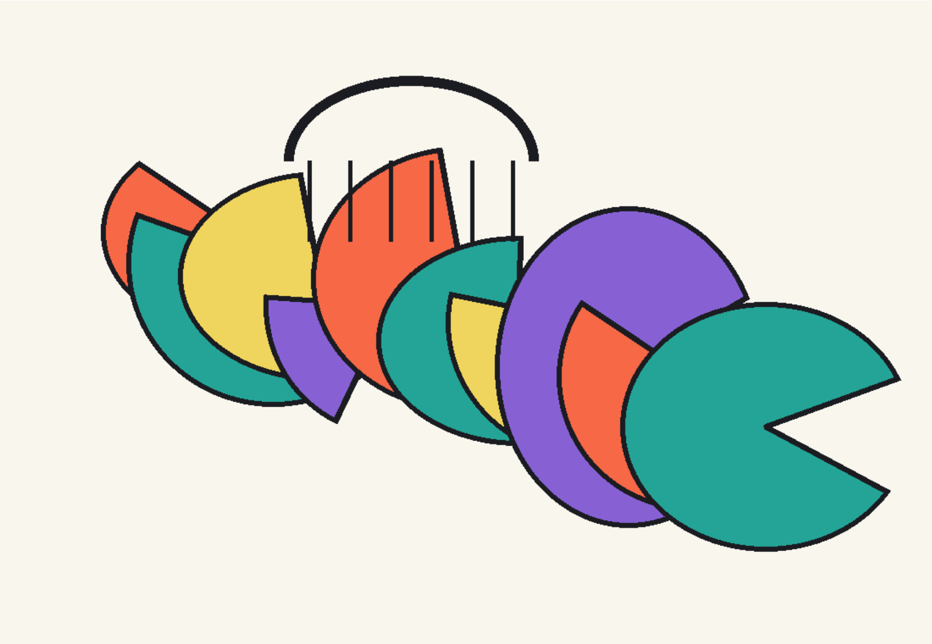

चित्र 8

मुदा पहरा देहकेँ रोकैत अछि, मोनकेँ नहि। रेशमाक मोन त' दिन-राति घाटेपर रहैत छल। आ पहराक एकटा उल्टा असरि सेहो होइत छै — जे वस्तु रोकल जाए, से आरो प्रिय भऽ जाइत अछि।

एम्हर भाइ अजय सिंहक तामस पहरासँ शान्त नहि भेल। ओकर हिसाबमे कलंकक जड़ि रेशमा नहि — चूहड़मल छल। आ जड़ि काटबाक ओकर उपाय वैह छल जे अहंकार सदिखन सोचैत अछि: गरदनि।

अध्याय ५ : रामजीत आ मन्ने खाँ

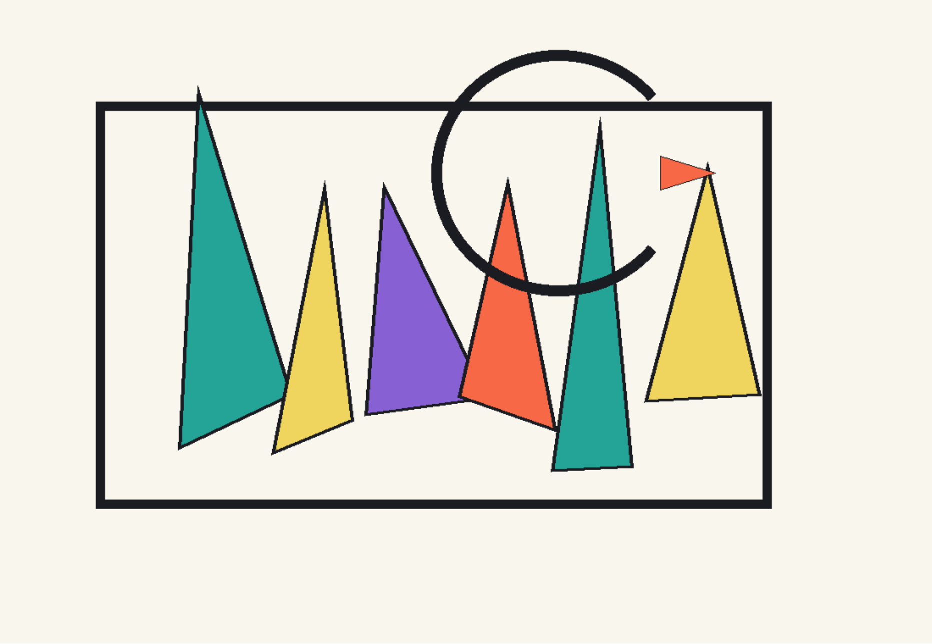

चित्र 9

अजय सिंहक कहलापर दू गोटे बिदा भेलाह — गड़ेरिया रामजीत आ मन्ने खाँ। काज: चूहड़मलक गरदनि काटब। दाम तय, हथियार तेज, आ शिकार? — एकटा बोनिहार, जकरा मारब हुनका सभकेँ खेल बुझाइत छल।

मुदा आहि रे ब्बा! हुनका सभकेँ ई के कहलकनि जे जकर गरदनि काटए जा रहल छथि, से अखराहाक शेर थिक?

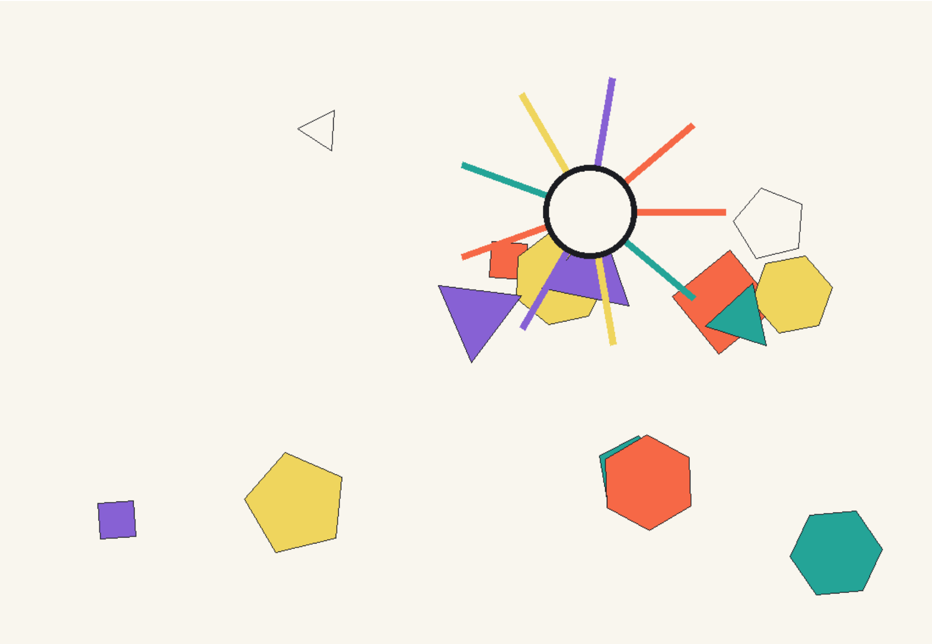

चित्र 10

घात लगाओल गेल, वार भेल — आ फेर जे भेल, से मोकामा घाट आइयो कहैत अछि: कथी ले से होएत — उनटे चूहड़मल तरुआरिसँ गरदनि काटि लेलक गड़ेरिया रामजीत आ मन्ने खाँक! मारए आएल दुनू अपने मारल गेलाह।

ई चूहड़मलक पहिल रक्तपात छल — आ आत्मरक्षामे भेल छल। मुदा ओ जनैत छल जे एहि घटनाक अर्थ की थिक: आब युद्ध खुजि गेल। हवेली अपन भाड़ाक हथियार गमओलक — आब ओ अपन असली फौज लऽ कऽ आओत। आ निशाना खाली चूहड़मल नहि — पूरा टोल हएत।

अध्याय ६ : टोलपर आक्रमण

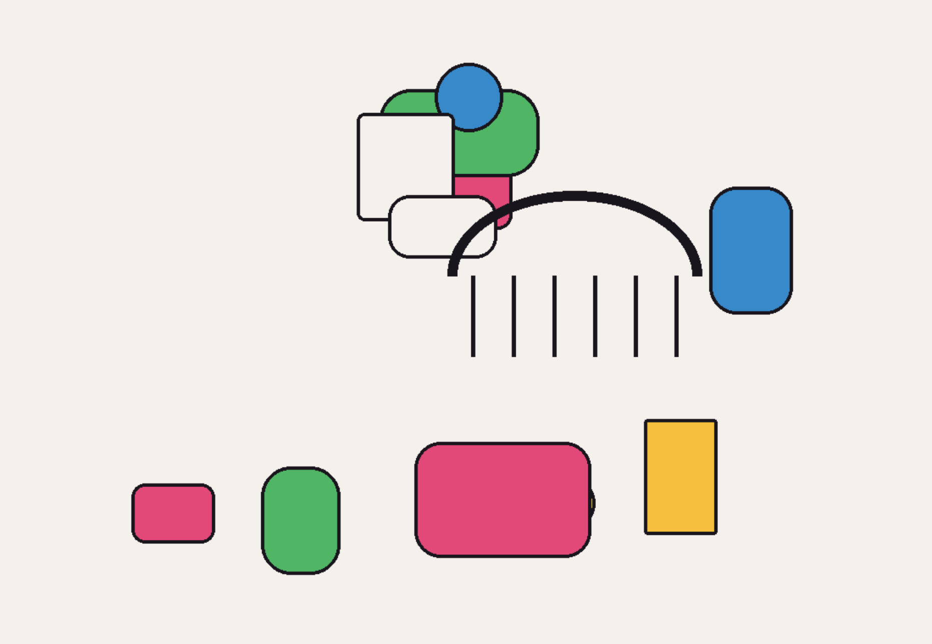

चित्र 11

आ सैह भेल — दूधबंसी टोलपर आक्रमण!

अजय सिंहक अगुआइमे हथियारबन्द लोक टोलपर चढ़ि आयल। फूसक घर, निहत्था बोनिहार, कानैत बच्चा — आ ऊपरसँ तरुआरि-भाला। एकटा प्रेमक दाम पूरा टोलसँ वसूलल जा रहल छल।

चित्र 12

चूहड़मल छातीपर ढाल बनि ठाढ़ भेल, मुदा ओ एकसर — आ सोझाँ पूरा हवेलीक बल। टोलक भाग्य ओहि दिन तरुआरिक धारपर काँपि रहल छल।

तखन ओ भेल जे केओ नहि सोचने छल — रेशमा! पहरा तोड़ि रेशमा दौड़लि गेलि बाप अजबी सिंह लग, आ हाथ जोड़ि, कानि, अड़ि — आक्रमण रोकबओलक। 'हमर कारणसँ निर्दोषक रक्त बहत, त' पहिने हमर!' — बेटीक हठक आगाँ बापकेँ झुकए पड़ल। तरुआरि म्यानमे घुरल। ओहि दिन मोकामा बुझलक जे रेशमा खाली प्रेम करब नहि, प्रेम निमाहब सेहो जनैत अछि।

अध्याय ७ : रामसखीक जादू

चित्र 13

मुदा आब रेशमाकेँ ईहो बुझा गेल छल जे हवेली आ घाटक बीचक ई खींचातानी कोनो सुखद अन्त धरि नहि जाएत। जे करबाक अछि, अपने करबाक अछि — आ जल्दी।

रेशमाक संग छलि ओकर सखी-बहिनपा रामसखी — आ रामसखी लग छल जादू। खिस्सा-लोकमे सखी लग सदिखन किछु ने किछु रहैत छै — कखनो जादू, कखनो जोगाड़, कखनो खाली अटूट साथ। रामसखी लग तीनू छल।

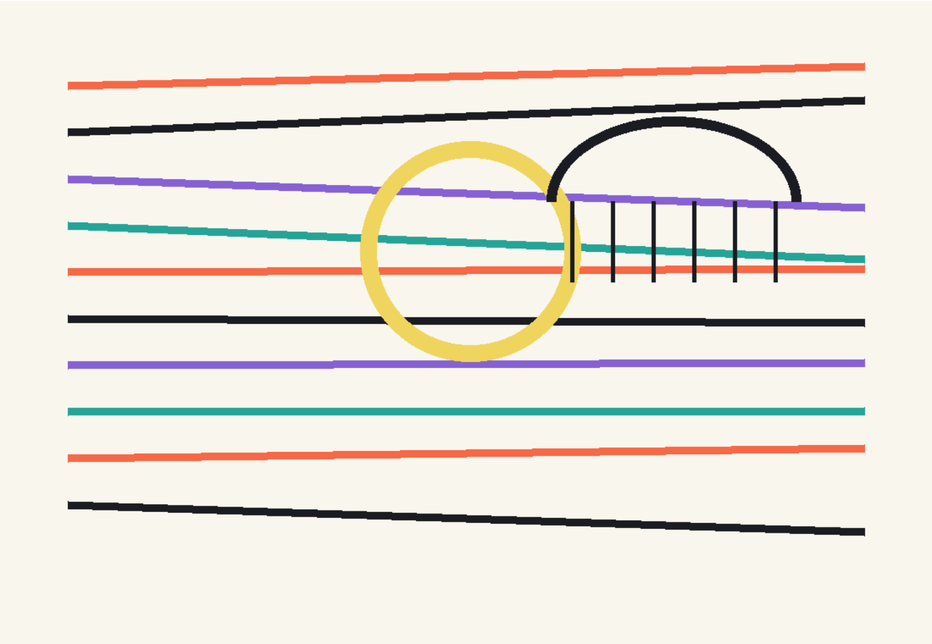

चित्र 14

गेलि रेशमा रामसखीक संग फेर चूहड़मलसँ भेँट करबा लेल — गंगाक तटपर। रामसखी जादूसँ दऽ आयल रेशमाकेँ चूहड़मल लग: जादूक असरिसँ क्यो रेशमाकेँ देखि नहि सकल। पहरेदारक आँखिक आगाँसँ रेशमा निकलि गेलि — अदृश्य, जेना हवाक झोंक।

आ गंगा-तटपर, बरखोक 'नहि'क बाद, चूहड़मल पहिल बेर 'हँ' कहलक। जे वीर तरुआरिसँ नहि हारल छल, से रेशमाक जिद आ त्यागसँ हारि गेल। आब दुनूक आगाँ एक्कहि बाट छल — आ ओ बाट काली मन्दिर दिस जाइत छल।

अध्याय ८ : शोनितक सिनूर

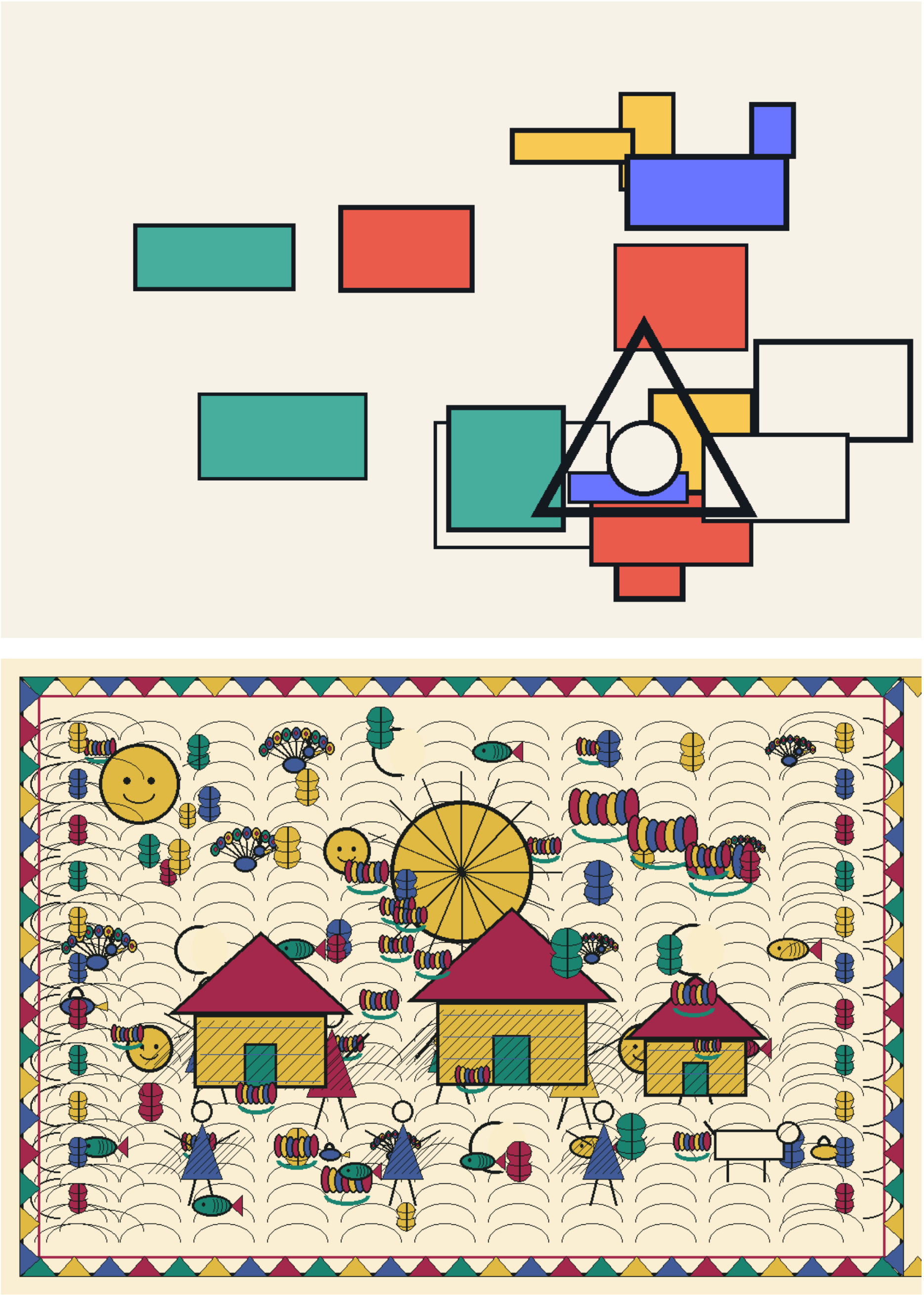

चित्र 15

घोड़ापर दुनू गोटे बिदा भेलाह — मोकामा टाल लग काली मन्दिर। ने बरियाती, ने शहनाई, ने मड़बा — साक्षी खाली काली माता, गंगाक हवा, आ एकटा पुरहित।

सिनूर? — सिनूरक डिब्बा के अनितए! तखन चूहड़मल ओ केलक जे एहि गाथाकेँ अमर कऽ गेल: अपन देहसँ शोनित निकालि, ओही शोनितसँ रेशमाक माँग भरि देलक।

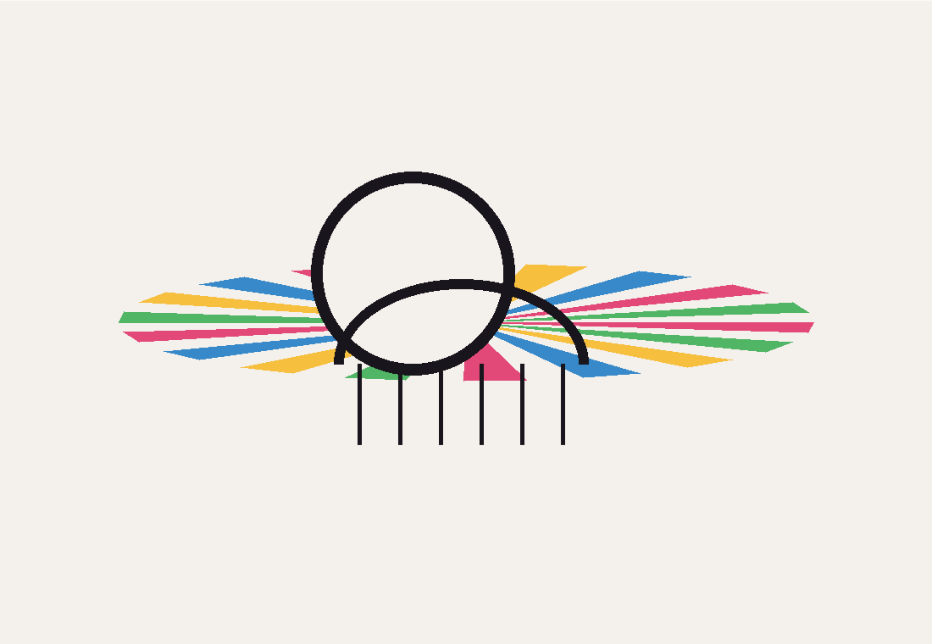

चित्र 16

शोनितक सिनूर! — एहिसँ गाढ़ सिनूर संसारमे दोसर नहि। पुरहित आशीष देलक, काली माताक आगाँ दीप काँपल, आ मोकामा टालक हवामे एकटा नव गृहस्थीक पहिल साँस घुलल।

मुदा ई साँस पूरो नहि भेल छल कि टापक आवाज आबि गेल — घेरि लेल गेलाह! हवेलीक फौज मन्दिर धरि पहुँचि गेल छल। चूहड़मल एक क्षणमे बुझि गेल — आब जे हएत, से रक्तेसँ लिखाएत। ओ रेशमाकेँ लग बजओलक, आ पहिल काज केलक ओकर रक्षाक: महुक गाछपर बैसा देलक रेशमाकेँ — 'जे किछु हो, उतरब नहि।'

अध्याय ९ : अन्तिम युद्ध

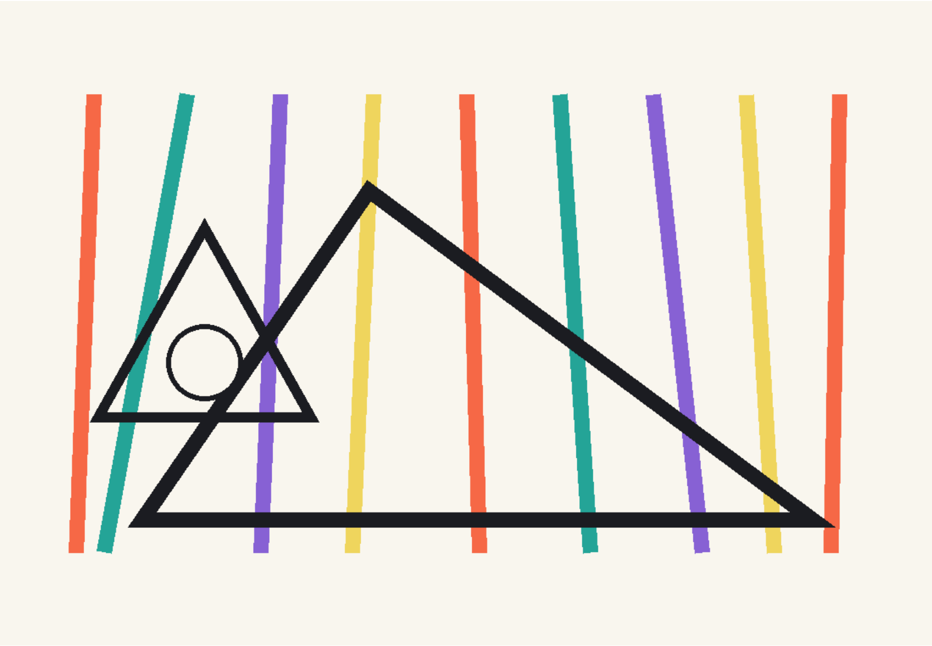

चित्र 17

आ फेर भयंकर युद्ध भेल।

एक कात चूहड़मल — असगर, नव-विवाहित, अपन सोहागक पहिल पहरक रक्षामे; दोसर कात हथियारबन्द दल। मुदा अखराहाक शेर ओहि दिन एहन लड़ल जे घेरनिहारक पएर उखड़ए लागल। तरुआरि बिजली बनल, ढाल पहाड़ — चूहड़मल जितय बला रहए!

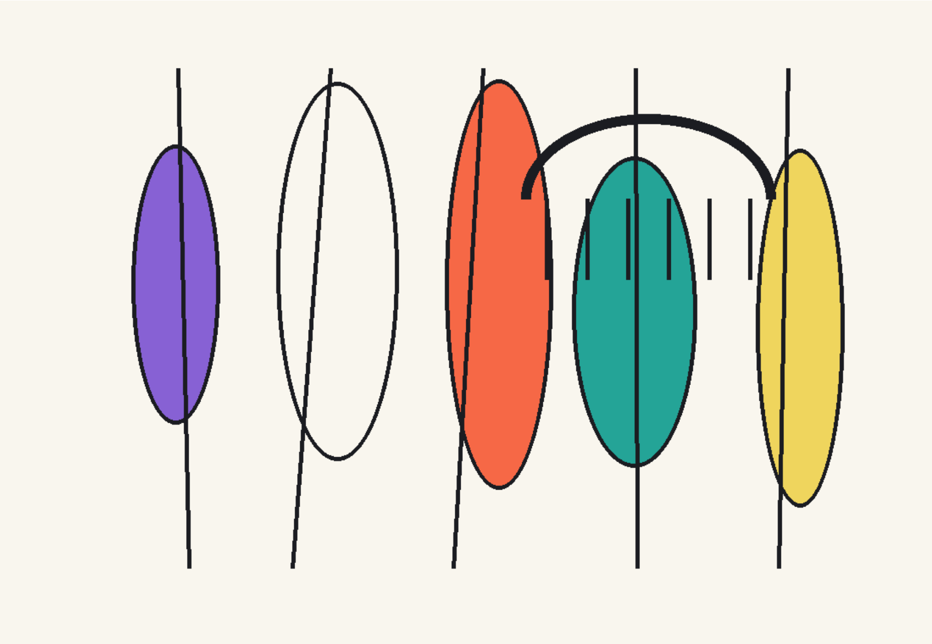

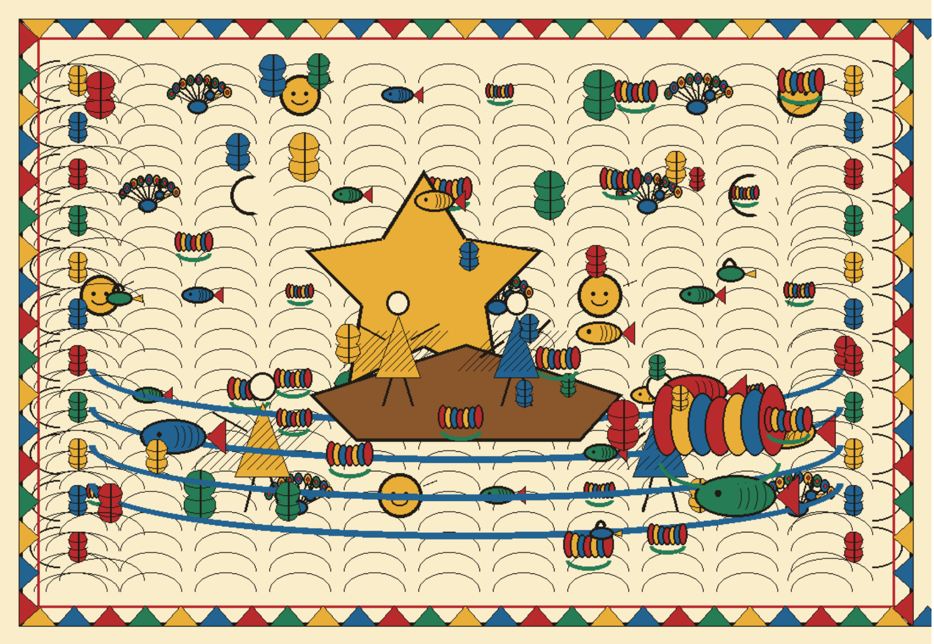

चित्र 18

मुदा नियति... ठीक तखने कलुआ सिपाही — जे लड़ाइक हल्लामे नुकाएल घात ताकि रहल छल — महुक गाछ दिस लपकल आ रेशमाकेँ लऽ कऽ भागि गेल!

'रेशमा!' — चूहड़मलक हुंकारसँ युद्धभूमि चीरा गेल। जीतल मैदान ओतहि छोड़ि ओ दौगल — घोड़ापर चढ़ि, आन्ही बनि। आगाँ कलुआ, पाछाँ चूहड़मल, आ बीचमे घटैत दूरी... मुदा तखने पाछाँसँ वार भेल — घोड़ा मारल गेल। घोड़ा खसल, सवार खसल — आ घेरनिहार सभ टूटि पड़ल।

अध्याय १० : रेशमा-रेशमा

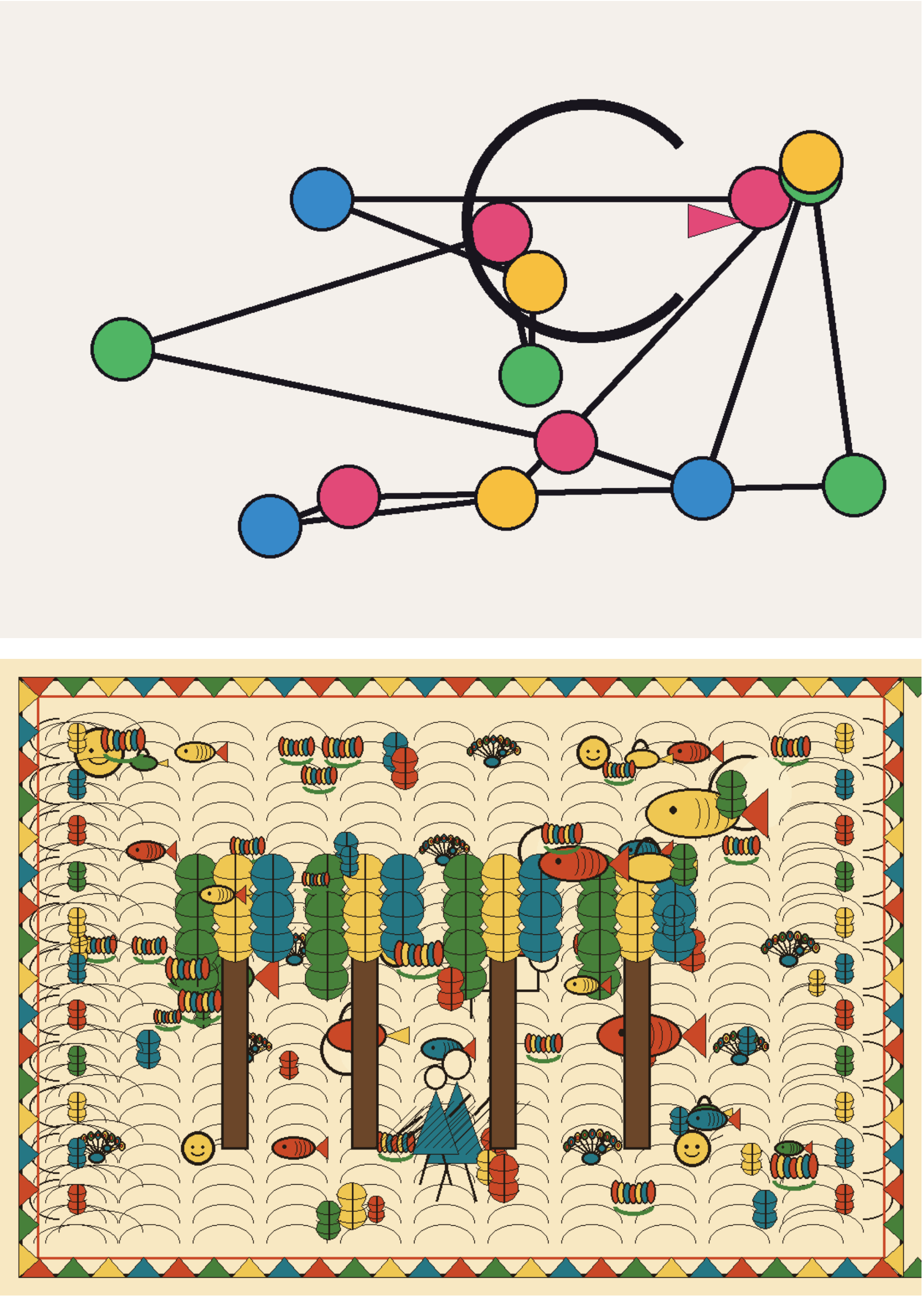

चित्र 19

मोकामा टालक माटिपर अखराहाक शेर घायल पड़ल छल — आ ओकर ठोरपर ने कोनो प्रार्थना छल, ने कोनो शाप। छल खाली एकटा नाम:

'रेशमा... रेशमा...'

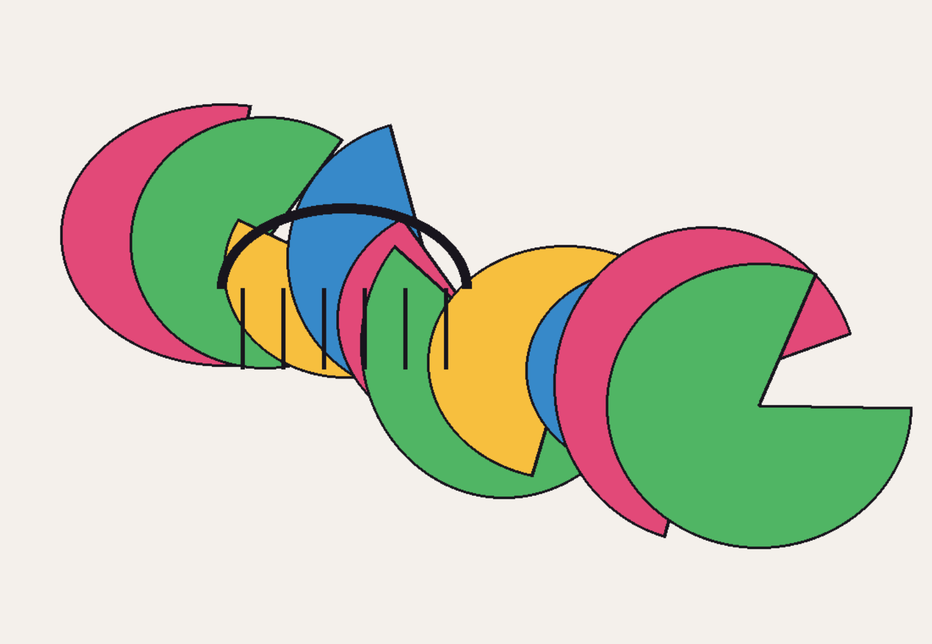

चित्र 20

जे वीर रामजीत-मन्ने खाँक तरुआरि झेललक, टोलक रक्षामे एकसर ठाढ़ भेल, घेरामे सेहो जितैत रहल — से अन्तमे प्रेमक नामकेँ टेरैत प्राण त्यागि देलक। रेशमा-रेशमा करैत चूहड़मल मरि गेल। नव-विवाहिताक शोनित-सिनूर एखन सुखाइयो नहि सकल छल कि सोहाग उजड़ि गेल।

आ रेशमा? गाथा ओकर आगाँक कथा चुप्पीमे छोड़ि दैत अछि — आ ई चुप्पी कोनो वर्णनसँ बेसी करुण थिक। जे कन्या प्रेम लेल हवेली, पहरा, समाज — सभसँ लड़लि, से अपन सोहागक लहासो धरि नहि पहुँचि सकलि। दुखान्तक एहिसँ गहींर तल आर की?

अध्याय ११ : रेशमा-चूहड़मल मन्दिर

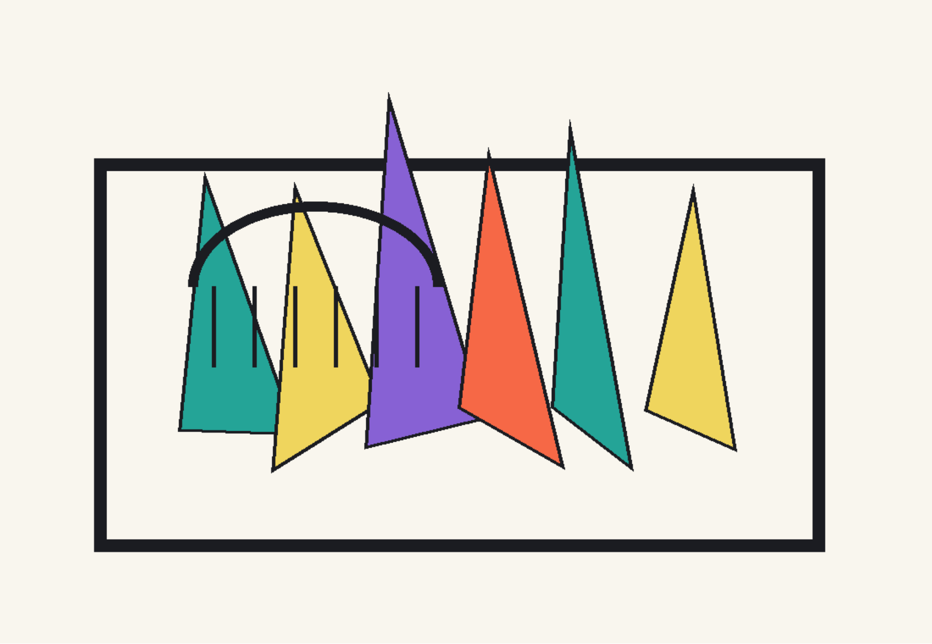

चित्र 21

बचल अछि स्मृति टा मात्र — मुदा केहन स्मृति!

मोकामा टालमे रेशमा-चूहड़मल मन्दिर अछि — दुनूक नाम संगे, जेना जीवनमे नहि जुड़ि सकल, से पाथरपर जुड़ि गेल। जाहि समाजक देवाल दुनूकेँ अलग केलक, वैह समाज आब दुनूक संग-पूजा करैत अछि। समयक एहिसँ पैघ प्रायश्चित्त की?

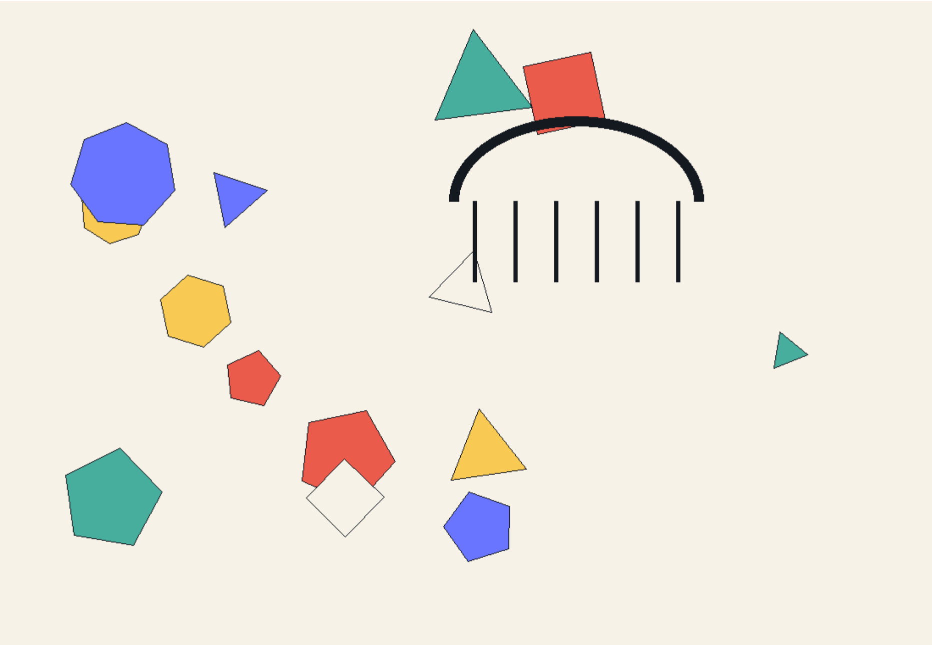

चित्र 22

आ ओतय सभ बरख मेला लगैत अछि। हजारो लोक जुटैत अछि — दूधबंसी सेहो, भूमिहार सेहो, आ सभ जातिक लोक — एक्कहि मेलामे, एक्कहि मन्दिरक आगाँ। जे प्रेम जीबैत काल दू टोलकेँ लड़ओलक, से मरला उत्तर हजारो लोककेँ जोड़ैत अछि।

मोकामाक बूढ़ लोक कहैत छथि — साँझखन जखन गंगापर हवा चलैत अछि, त' टालक महुक गाछ सभ अपने डोलए लगैत अछि। के जनए — कदाचित् ओहि डोलबमे आइयो कियो बैसलि अछि, आ नीचाँ, माटिपर, कियो ओकर पहरा दऽ रहल अछि। खिस्सा कहैत अछि: प्रेमी मरि जाइत अछि, प्रेम मेला बनि जाइत अछि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in